वैशेषिक दर्शन में पदार्थ के रूप में गुण

वैशेषिक दर्शन में चौबीस (24) प्रकार के गुण माने गये हैं जो निम्न हैं — (1) रूप (2) स्वाद (3) स्पर्श (4) गन्ध (5) शब्द (6) संयोग (7) विभाग (8) दूरत्व (9) अपरत्व (10) पृथकत्व (11) परिमाण (12) बुद्धि (13) सुख (14) दुःख (15) इच्छा (16) द्वेष (17) प्रयत्न (18) गुरुत्व (19) द्रवत्व (20) स्नेह (21) संस्कार (22) संख्या (23) धर्म (24) अधर्म। इन चौबीस गुण में भौतिक और मानसिक गुण संग्रहीत है। रूप, गन्ध, स्वाद, स्पर्श, शब्द क्रमशः अग्नि, पृथ्वी, जल, वायु और आकाश के गुण है। ये गुण भौतिक कहे जाते हैं। इसके अतिरिक्त सुख-दुःख, बुद्धि, इच्छा, द्वेष आदि मानसिक गुण हैं।

(1) **रूप** :- रूप एक विशेष गुण है जिसका प्रत्यक्ष सिर्फ चक्षु से होता है। इसका निवास स्थान पृथ्वी, जल और तेजस है। श्वेत, नील, रक्त, पीत, हरित आदि विभिन्न प्रकार के रूप होते हैं।

(2) **स्वाद** :- इसका प्रत्यक्ष रसना से ही होता है। रस छः प्रकार का होता है - मधुर, कटु, तीता, कषाय, लवण और नमकीन।

(3) **स्पर्श** :- इसका प्रत्यक्ष केवल त्वचा से होता है। शीत उष्ण तथा अशीतोष्ण स्पर्श के तीन प्रकार हैं।

(4) **गन्ध** :- इसका प्रत्यक्ष केवल नासिका के द्वारा होता है। इसका निवास स्थान पृथ्वी है। गन्ध दो प्रकार का होता है। सुगन्ध और दुर्गन्ध।

(5) शब्द भी रूप, रस, गन्ध, स्पर्श की तरह एक विशेष गुण है। इसका प्रत्यक्ष ज्ञान सिर्फ कान से ही होता है।

(6) दो पृथक रहने वाले द्रव्यों मिलने से जो सबंन्ध होता है उसे संयोग कहा जाता है, जैसे हाथ का कलम के साथ। संयोग तीन प्रकार का होता है।

(1) अन्यतर कर्मज - यह संयोग दो द्रव्यों में से एक द्रव्य की गति के कारण उत्पन्न होता है। चिड़ियाँ का उड़कर पहाड़ पर बैठ जाने से